एम.एच.डी.-14

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

01334

सत्रांत परीक्षा

जून, 2009

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पहला और छठा प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **2x10=20**

   (a) ईश्वर वह दिन कब लायेगा कि हमारी जाति में स्त्रियों का आदर होगा। स्त्री मैले-कुचैले, फटे-पुराने वस्त्र पहनकर आभूषणविहीन होकर, आधे पेट सूखी रोटी खाकर, झोपड़े में रहकर, मेहनत-मजदूरी कर, सब कष्टों को सहते हुए आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकती है। केवल घर में उसका आदर होना चाहिए, उससे प्रेम होना चाहिए। आदर या प्रेमविहीन महिला महलों में भी सुख से नहीं रह सकती, पर मैं अज्ञान, अविद्या के अन्धकार में पड़ा हुआ था। अपना उद्धार करने का साधन मेरे पास

न था। न ज्ञान था, न विद्या थी, न भक्ति थी, न कर्म की सामर्थ्य थी। मैंने अपने बन्धुओं की सेवा करने का निश्चय किया। यही मार्ग मेरे लिए सबसे सरल था। तब से मैं यथाशक्ति इसी मार्ग पर चल रहा हूँ और अब मुझे अनुभव हो रहा है कि आत्मोद्धार के मार्गों में केवल नाम का अन्तर है।

(b) इधर तो मित्र-भवन की मण्डली नाटक खेल रही थी, मस्तानों की तानें और प्रियनाथ की सरोद-ध्वनि रंग भवन में गूँज रही थी। उधर बाबू ज्ञानशंकर नैराश्य के उन्मत्त आवेश में गंगातट की ओर लपके चले जाते थे, जैसे कोई टूटी हुई नौका जल तरंगों में बहती चली जाती हो। आज प्रारब्ध ने उन्हें परास्त कर दिया। अब तक उन्होंने सदैव प्रारब्ध पर विजय पायी थी। आज पासा पलट गया और ऐसा पलटा कि सँभलने की कोई आशा न थी।

(c) यह सर्वमान्य नीति-सिद्धान्त था कि राजा भोक्ता है, प्रजा भोग्य है। यही सृष्टि का नियम था, लेकिन आज राजा और प्रजा में भोक्ता और भोग्य का संबंध नहीं है, अब सेवक और सेव्य का संबंध है। अब अगर किसी राजा की इज्जत है, तो उसकी सेवा-प्रवृत्ति के कारण, अन्यथा उसकी दशा दाँतों तले दबी हुई जिह्वा की सी है। प्रजा को भी उस पर विश्वास नहीं आता। अब जनता उसी का

सम्मान करती है, उसी पर न्योछावर होती है, जिसने अपना सर्वस्व प्रजा पर अर्पित कर दिया हो, जो त्याग-धन का धनी हो।

(d) विपत्ति में हमारा मन अंतर्मुखी हो जाता है। जालपा को अब यही शंका होती थी कि ईश्वर ने मेरे पापों का यह दंड दिया है। आखिर रमानाथ किसी का गला दबाकर ही तो रोज रुपये लाते थे। कोई खुशी से तो न दे देता। यह रुपये देखकर वह कितनी खुश होती थी। इन्हीं रुपयों से तो नित्य शौक-शृंगार की चीजें आती रहती थीं। उन वस्तुओं को देखकर अब उसका जी जलता था। यही सारे दुःखों की मूल हैं। इन्हीं के लिए तो उसके पति को विदेश जाना पड़ा। वे चीजें उसकी आंखों में अब कांटों की तरह गड़ती थीं, उसके हृदय में शूल की तरह चुभती थीं।

2. प्रेमचंद के उपन्यास संबंधी विचारों का विश्लेषण कीजिए। **10**

3. 'सेवासदन' के वस्तु संगठन और उसकी औपन्यासिकता पर प्रकाश डालिए। **10**

4. 'रंगभूमि' में चित्रित स्वाधीनता आन्दोलन के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। **10**

5. 'गबन' के कथानक का विश्लेषण कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2x5=10

(a) 'प्रेमाश्रम' का शीर्षक

(b) जालपा के चरित्र में हुए परिवर्तन का विश्लेषण

(c) 'रंगभूमि' में जॉन सेवक

(d) 'सेवा सदन' का उद्देश्य

- o 0 o -